Topic 11- पञ्चमी विभक्ति 2

वारणार्थानामीप्सितः ।

प्रवृत्तिविघातो वारणम् । वारणार्थानां धातूनां प्रयोगे ईप्सितोऽर्थोऽपादानं स्यात् । यवेभ्यो गां वारयति । ईप्सितः किम् ? यवेभ्यो गां वारयति क्षेत्रे ॥

प्रवृत का विघात (रोकना) वारण का अर्थ है । वारण अर्थवाले धातुओं के प्रयोग में जिससे वारण अभिष्ट हो वह अर्थ अपादान संज्ञक हो। यवेभ्यो गां वारयति — इस उदाहरण में यव ईप्सित है अतः यव की अपादान संज्ञा होती है। गाय यव का नाश करती है, अतः उसे यव चरने से रोका जाता है। ग्रन्थकार का प्रश्न है कि सूत्र में ईप्सित शब्द का ग्रहण क्यों किया ? उत्तर है कि यवेभ्यो गां वारयति क्षेत्रे, इस प्रत्युदाहरण में क्षेत्र ईप्सित नहीं, अपितु क्षेत्र में स्थित यव ईप्सित है, अतः क्षेत्र में अधिकरण सप्तमी होती है।

अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति ।

अन्तर्धौ (व्यवधाने सति) यत्कर्तृकस्य आत्मनो दर्शनस्य अभावमिच्छति तदपादानं स्यात् । मातुर्निलीयते कृष्णः । अन्तर्धौ किम् ? चौरान्न दिदृक्षते । इच्छति ग्रहणं किम् ? अदर्शनेच्छायां सत्यां सत्यपि दर्शने यथा स्यात् ॥

अन्तर्धि अर्थात् व्यवधान होने पर जिससे अपना अदर्शन चाहता है, वह अपादान है। मातुर्निलीयते कृष्णः — इसमें कृष्ण माता से छिपता है, अर्थात माता मुझे न देखे यह चाहता है, अतः मातृशब्द की अपादान संज्ञा होगई और उसमें मातुः यह पञ्चमी हुई।

नियमपूर्वकविद्यास्वीकारे वक्ता अपादानसंज्ञः स्यात्।
उपाध्यायादधीते उपयोगे किम् । नटस्य गाथां
शृणोति ॥

नियमपूर्वक विद्याध्ययन करने पर वक्ता अपादान-संज्ञक हो जैसे उपाध्यायादधीते - अध्यापक से (नियमपूर्वक) पढ़ता है। इसी प्रकार अधीयेऽहं गुरोर्वेदम् । अधीत्वाऽध्यापका-च्छन्दः। अध्यापक से छन्द पढ़ो। अधीमे - पढ़ता हूँ। यहाँ उपाध्याय और अध्यापक में पञ्चमी हुई है।

जनिकर्तुः प्रकृतिः ।

जायमानस्य प्रकृतिः (कारणम्) अपादानं स्यात्।
ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते ।

जायमान (उत्पन्न होने वाले) की प्रकृति (उत्पत्ति कारण) अपादान संज्ञक है। ब्रह्मणः प्रजायन्ते का अर्थ है - ब्रह्मा से प्रजायें उत्पन्न होती हैं। यहाँ प्रजा की उत्पत्ति का कारण ब्रह्मा है। अतः उसकी अपादान संज्ञा होती है और इसमें पञ्चमी प्रयुक्त हुई है। ब्रह्मणः पञ्चमी का एकवचन ब्रह्मन् + अस्) इसी प्रकार पितुः संजायते पुत्रः (पितुः पञ्चमी का एकवचन)

भुवः प्रभवः ।
भवनं भूः। भवनकर्तुः (उद्भूत) प्रभवः अपादानं स्यात्। हिमवतो गंगा प्रभवति। तत्र प्रकाशते इत्यर्थः।

उद्भूत होने वाले पदार्थ का उद्गमस्थान अपादान संज्ञक है। हिमवतो गङ्गा प्रभवति हिमालय से गंगा उद्भूत होती है (निकलती है) यहाँ हिमवान् गंगा के उद्गम (प्रकाशन) का स्थान है। अतः उसकी अपादान संज्ञा होती है और उस अपादान में पञ्चमी होती है। हिमवतः यह हिमवत् शब्द का पञ्चमी एकवचन है। इसी प्रकार कलिन्दात् यमुना प्रभवति। कलिंदपर्वत से यमुना निकलती है, अतएव वह कालिन्दी कहलाती है यहाँ भी। कलिन्दात् में अपादान संज्ञा मूलक पञ्चमी है।